पटाचारा
एवं
भद्दा कापिलानी

(भगवान बुद्ध की अग्रश्राविकाएं)

विपश्यना विशोधन विन्यास

पटाचारा

एवं

भद्दा कापिलानी

(भगवान बुद्ध की अग्रश्राविकाएं)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

****

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

****

“एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकिानं भिक्खुनीनं -

विनयधरानं यदिदं पटाचारा।

पुब्बेनिवासं अनुस्सरन्तीनं यदिदं भद्दा कापिलानी।”

****

“भिक्षुओ, मेरी भिक्षुणी-श्राविकाओं में ये अग्र हैं -

विनय-धारियों में अग्र पटाचारा।

पूर्वजन्म अनुस्मरण करने वालियों में अग्र भद्दा कापिलानी।”

– अङ्गुत्तरनिकाय (१.१.२३८, २४४)

(भगवान बुद्ध की अग्रश्राविकाएं)

पटाचारा एवं भद्दा कापिलानी

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [vii]

पटाचारा.....१

वर्तमान कथा १
पटाचारा के दुर्दिन. २
अशरण को मिली शरण ४
धन्य विपश्यना! ७
चन्दा की मुक्ति ८
हम त्रैविद्य हुई. ९
पंचसता पटाचारा १०
उत्तमा को उपदेश १२
विनय-धारियों में अग्र १२
अतीत कथा १२
भगवान गौतम बुद्ध का शासनकाल १३

भद्दा कापिलानी.....१४

जन्म १४
भद्दा कापिलानी एवं पिप्पली माणव का विवाह . . १४
घर से बेघर हुई. १५
अद्भुत त्याग १६
तित्थियाराम में पांच वर्ष १७
पूर्व-जन्मों का अनुस्मरण १८
भद्दा का भव-संसरण १९
भगवान विपस्सी का शासनकाल १९

द्वेष का दुष्परिणाम २०
भगवान कस्सप का शासनकाल २०
प्रव्रज्या-ग्रहण २१
भगवान गौतम बुद्ध का काल २३

प्रकाशकीय

भगवान बुद्ध की वाणी से अभिसिंचित तिपिटक – भगवान के महाश्रावकों, महाश्राविकाओं, उपासकों, उपासिकाओं के प्रेरणादायी प्रसंगों से ओत-प्रोत है। भगवान ने इनमें से कई पात्रों को उनके विशेष गुणों की वजह से उन्हें अग्र की उपाधि प्रदान की तथा उनके गुणों को अपने आचरण में उतारने के लिए परिषद को प्रेरित किया। प्रस्तुत पुस्तिका भिक्षुणी पटाचारा एवं भद्दा कापिलानी के जीवन प्रसंगों पर आधारित है। भगवान ने अपनी भिक्षुणी-श्राविकाओं में भिक्षुणी पटाचारा को विनयधारियों में तथा भिक्षुणी भद्दा कापिलानी को पूर्वजन्म अनुस्मरण करने वालियों में अग्र की उपाधि प्रदान की।

****

पटाचारा श्रावस्ती नगर के महाधनी श्रेष्ठी की पुत्री थी। युवा पुत्री की सेवा पर एक युवा नौकर रखा गया, जिसकी कुसंगत से वह भटक गयी। उसका विवाह कहीं और न हो जाय, इस भय से वे दोनों घर से भाग निकले और नगर से दूर एक छोटे से गांव में जा बसे।

साथ लाया हुआ धन बहुत दिन काम न आ सका। अत्यंत विपन्न अवस्था में दिन बीतने लगे। दो पुत्र हुए पर दोनों मृत्यु को प्राप्त हो गये। पति को काले नाग ने डस लिया। वह दुखियारी अभागिन नारी रोती, बिलखती अकेली श्रावस्ती की ओर चल पड़ी। रास्ते में पता चला कि पिछली रात तेज आंधी-तूफान व वर्षा के कारण पिता की सात-मंजिला अट्टालिका ढह गयी। इसमें उसके पिता, माता और भाई तीनों दब कर मर गये। अब संसार में उसका कोई नहीं रहा। वह नितांत पागल हो गयी। श्रावस्ती की सड़कों और गलियों में नग्न फिरने लगी।

अपने पूर्वपुण्य कर्मों के कारण भगवान के संपर्क में आयी। भगवान ने उसे धर्मदेशना दी। भीतर-भीतर ही विपश्यना चल पड़ी। पूर्वपारमिताओं के कारण स्रोतापन्न हुई। भगवान ने उसे प्रव्रजित करवाया।